अंग्रजों की क्रूरता की कहानी लाल कोठी की जुबानी

फिरंगियों को भारत छोड़े 55 वर्षो से अधिक समय गुजर गये। 52 वां गणतंत्र दिवस सामने है। बहुत कुछ बदल गया। देश महाशक्ति बनने की दौड़ में है। इतने परिवर्तन के बावजूद अगर कुछ नहीं बदला है तो कांटी के अंग्रेज जमींदारों द्वारा स्थापित लाल कोठी का भय। अंग्रजों के उत्थान काल में कर वसूली एवं अरामगाह के लिए स्थापित कांटी प्रखंड मुख्यालय स्थित लाल

सम्राट कुमार

कोठी के प्रथम अंग्रेज अधिकारी का नाम हालांकि किसी को ज्ञात नहीं है फिर भी उसकी क्रुरता के कारण उसे लोग जालिम साहब कह कर संबोधित करते थे। तीन ओर से झील एवं एक ओर सड़क के बीचों बीच कांटी कोठी बना है। बिसारा परगना अन्तर्गत कांटी की उपजाऊ भूमि मे धन लिप्सा के कारण नील की खेती होती थी। जो किसान नील की खेती करने से इंकार करता उसे जालिम साहब

सरबार किया जाता था। उसके बाद विषरहित सर्पों के खानगार मे फेंक दिया जाता था। वहां से उसे आठ-दस घंटे बाद निकालकर भूखी मुर्गियों के केबिन में बंद कर दिया जाता था। भूखी मुर्गियों खाने के उद्येश्य से उक्त आदमी के शरीर पर चोचों मारकर उसे असीम वेदना पहुंचती थी। स्वतंत्रता सेनानी योगेन्द्र साह ने बताया कि कोठी के अंग्रेज अधिकारी ने फरमान जारी कर रखा था कि इलाके मे कोई व्यक्ति न तो चप्पल या खराऊ का उपयोग करेगा ना हि खटिया का। नील की खेती के कारण जनता भोजन सामग्री के लिए अंग्रजी सरकार के खाद्यान्न पर निर्भर रहती थी। शकरकंद, आलू, सतुआ आदि उपजाते थे। वर्ष 1931 में अंग्रेज अधिकारी जालिम साहब से इस इलाके की जमींदारी वापस लेकर हुकुमत ने कलकत्ता के एक बंगाली अशोक कुमार बॉस को यह सत्ता

नीलहा कोठी

खौफ खाते थे जिससे हर खास–व–आम

भारत छोड़ो आन्दोलन से पूर्व तक विद्या में तीन कट्ठा जबरन नील की खेती और मजदूरी के नाम पर अंग्रेजों द्वारा 'तीन आना की मजदूरी' यही जिन्दगी बन गया था। आरिजपुर के आस-पास के इलाकों में रहने वाले कास्तकारों और मजदूरों की। यह कोई कहानी नहीं हकीकत थी। उस जमाने में अंग्रेजों की करतूतों और यहां के लोगों पर किये गये जुल्म की वयान करते एक वृद्ध कास्तकार माधव प्रसाद सिंह ने अपनी जुबानी आरिजपुर कोठी की इतिहास बताते हैं। आरिजपुर कोठी में रह रहे अंग्रेजों का इतना खौफ था कि लोग उसके कोठी के सामने से होकर गुजरने में डरते थे। अंग्रेज गाई साहब का इतना खौफ था लोगों के मन में कि

प्रकाश रंजन

कोई किसान अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता था। अंग्रेज साहब के सिपाही और पटवारी का फरमान चलता था। अंग्रेज गार्ड का तीन सौ एकड़ में फैले रकबा में तो नील की खेती यहां के किसानों द्वारा जबरन कराया जाता था। उस समय अंग्रेजों की अपनी नील की फैक्टरी भी आरिजपुर में था, जहां पर किसानों से

अंग्रेजों की क्रूरता की कहानी लाल कोठी की जुबानी

फिरंगियों को भारत छोड़े 55 वर्षो से अधिक

समय गुजर गये। 52 वां गणतंत्र दिवस सामने है। बहुत कुछ बदल गया। देश महाशक्ति बनने की दौड़ में है । इतने परिवर्तन के बावजूद अगर कुछ नहीं बदला है तो कांटी के अंग्रेज' जमींदारों द्वारा स्थापित लाल कोठी का भय । अंग्रजों के उत्थान काल में कर वसूली एवं अरामगाह के लिए स्थापित कांटी प्रखंड मुख्यालय स्थित लाल

सम्राट कुमार

कोठी के प्रथम अंग्रेज अधिकारी का नाम हालांकि किसी को ज्ञात नहीं है फिर भी उसकी क्रूरता के कारण उसे लोग जालिम साहब कह कर संबोधित करते थे। तीन ओर से झील एवं एक ओर सड़क के बीचों बीच कांटी कोठी बना है। बिसारा परगना अन्तर्गत कांटी की उपजाऊ भूमि मे धन लिप्सा के कारण नील की खेती होती थी । जो किसान नील की खेती करने से इंकार करता उसे जालिम साहब कोठी में बुलवाकर सजा देते थे। सजा भी ऐसी की अंग्रेज अधिकारी की हां में हां और ना में ना करने के समय प्रतिकार की कल्पना भी रूहें हिला देती। सजा के लिए बतौर जमींदार ने कई तरह के जानवर पाल रखे थे। विषरहित सर्प कुत्तों का झुंड, आदमखोर मछलियां इत्यादि ।

अंग्रेज अफसर हुक्म उदुली के विषय पर

सरबार किया जाता था। उसके बाद विषरहित सर्पों के

*रत छोड़ो आन्दोलन से पूर्व तक विद्या में तीन कट्ठा

भा जबरन नील की खेती और मजदूरी के नाम पर

अंग्रेजों द्वारा 'तीन आना की मजदूरी' यही जिन्दगी बन गया था। आरिजपुर के आस-पास के इलाकों में रहने वाले कास्तकारों और मजदूरों की। यह कोई कहानी नहीं हकीकत थी। उस जमाने में अंग्रेजों की करतूतों और यहां के लोगों पर किये गये जुल्म की वयान करते एक वृद्ध कास्तकार माधव प्रसाद सिंह ने अपनी जुबानी आरिजपुर कोठी की इतिहास बताते हैं। आरिजपुर कोठी में रह रहे अंग्रेजों का इतना खौफ

नीलहा कोठी

खौफ खाते थे

जिससे हर

खास-व- आम

प्रकाश रंजन

था कि लोग उसके कोठी के सामने से होकर गुजरने में डरते थे । अंग्रेज गाई साहब का इतना खौफ था लोगों के मन में कि कोई किसान अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता था। अंग्रेज साहब के सिपाही और पटवारी का फरमान चलता था। अंग्रेज गार्ड का तीन सौ एकड़ में फैले रकबा में तो नील की खेती यहां के किसानों द्वारा जबरन कराया जाता था। उस समय अंग्रेजों की अपनी नील की फैक्टरी भी आरिजपुर में था, जहां पर किसानों से बंदूक और घोड़े की कोड़े से जबरन मारपीट कर उनके खेतों में भी नील की खेती कराया जाता। इनकार करनेवाले लोगों पर अंग्रेज गार्ड साहब के पटवारी व जमादार द्वारा कोड़े भी लगाये जाते अथवा आरिजपुर कोठी पर साहब के मुर्गिखाने में भी लोगों को कई दिनों तक बंद रहना पड़ता ।

गार्ड साहब का भय और आतंक यहां के भोले-भाले लोगों में इस कदर छाया रहता था कि कोई छाता तक लगाकर कोठी के आसपास नहीं फटक सकता। यदि किसी ने उस कोठी के सामने से गुजड़ते थे तो अपना जुता और उताड़ लेते थे 1. यह सिलसिला 1942 तक चलता रहा, जिसका अंत भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान समाप्त हुआ। वृद्ध श्री सिंह बताते हैं कि उस अंग्रेज गार्ड से छुटकारा दिलाने के लिए स्व. शिवालक सिंह, भोला सिंह एवं रामवृक्ष सिंह के अलावे सैकड़ों लोगों ने महात्मा गांधी के आह्वान पर भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग

लिया।

स्वयं सजा मुकर्रर करते को

अंग्रेजों को भगाने के लिए दर्जनों बार नरहर सराय पुल ध्वस्त किया गया। जिसमें से कई लोग जेल भी गए। उस वक्त उस कोठी हालांकि उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को आज तक कोई लाभ के इर्द-गिर्द फटकना नहीं मिला। आज भी अंग्रेज गार्ड साहब की घिनौनी स्मृति का

थे

भी

-

1

खानगार मे फैंक दिया

जाता था। वहां से उसे आठ-दस घंटे बाद निकालकर भूखी मुर्गियों के केबिन में बंद कर दिया जाता था। भूखी मुर्गियों खाने के उद्येश्य से उक्त आदमी के शरीर पर चोचों मारकर उसे असीम वेदना पहुंचती थी। स्वतंत्रता सेनानी योगेन्द्र साह ने बताया कि कोठी के अंग्रेज अधिकारी ने फरमान जारी कर रखा था कि इलाके मे कोई व्यक्ति न तो चप्पल या खराऊ का उपयोग करेगा ना हि खटिया का । नील की खेती के कारण जनता भोजन सामग्री के लिए अंग्रजी सरकार के खाद्यान्न पर निर्भर रहती थी । शकरकंद, आलू, सतुआ आदि उपजाते थे। वर्ष 1931 में अंग्रेज अधिकारी जालिम साहब से इस इलाके की जमींदारी वापस लेकर हुकुमत ने कलकत्ता के एक बंगाली अशोक कुमार बॉस को यह सत्ता करीब एक लाख रूपये चुकाने पर दे दी में रंगे अशोक कुमार ने थी। अंग्रेजों से दोस्ती भी पूर्वस्थापित नियम कानून को बरकरार रखा। वर्ष 1941 को जब भारत स्वतंत्र हुआ कांटी की सारी संपत्ति अशोक कुमार बॉस कुमार बांस के नाम अपने संबंधी कमल

।

चले गये। स्वतंत्र भारत

कर वापस कलकत्ता

के

नागरिकों के

कमल बोस ने भी यहां आक्रोश के भय से की जमीन ओने पोने

दाम में बेचकर भाग गये। हालांकि आज

आम आवाम के जीता-जागता प्रमाण के रूप में आरिजपुर के नीलहा कोठी को कांटी की लाल कोठी लिए वर्जित था। इस देखा जा सकता है। जहां नील बनाने के लिए उन अंग्रेजी बगहा

के

पूर्व

नियम को तोडने वाले शासकों द्वारा नील हेतु जलप्रबंधन के लिए खोदे गये दो-ढाई विधायक चन्द्रशेखर व्यक्ति को पहले पीट- एकड़ का पोखड़, चार नील के हौज और ढह चुके कोठी द्विवेदी के परिवार की पीटकर शरीर से खन से अवशेष तौर पर मौजूद हैं।